भूमिका

चित्तौड़ की चढ़ाइयां

पहली चढ़ाई

महारानी पद्मिनी

सन् १२७५ ई० में राजकुमार लखमसी किशोर अवस्था में मेवाड़ के राज्य सिंहासन पर सुशोभित हुए। चित्तौड़ राजपूतों की दृष्टि में एक पूज्य स्थान है। किसी समय मेवाड़ की राजधानी था और हिन्दुओं के बड़े बड़े शिल्पकारों ने उसे स्वर्गधाम बना रक्खा था।

लखमसी की बाल्यावस्था में उसकी ओर से उसका चचा (काका) 'भीमसी' नामक राज करता था। भीमसी ऐसा चतुर और बुद्धिमान था कि उसके समय में यह रियासत सर्व प्रकार के झगड़े टंटों से सुरक्षित थी। दुःख और अशान्ति का कहीं नाम भी नहीं था किन्तु चारों ओर हर्ष और आनन्द के चिह्न दिखाई देते थे।

जिनमें से होना हुआ कई मनीषों के बाद विद्रोह [illegible]
पहुँचा और इस प्रकार उसने शत्रुओं को ढेर किया, [illegible]
मृत्यु के भेद [illegible] को ढेर देते हैं। कल्याणदीन [illegible]
[illegible] में कई भी कभी नहीं हटा रखा था, परन्तु [illegible]
की यातना ने इसे नाश किया दिया।

कल्याणदास [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के
[illegible] [illegible] [illegible] और पूर्ण [illegible] देने वाले [illegible]
[illegible] कि [illegible] का [illegible] करना [illegible]
[illegible] है। [illegible]

[illegible]

से सेना लेकर आप पर चढ़ाई की। अस्तु, जो होगया उसका तो कोई उपाय ही नहीं, परन्तु भविष्य में ऐसा न होगा और समय समय पर मैं आप का सहायता देता रहूँगा। राजपूतों में कपट और मायाचार कहाँ! ये बातें तो उनमें होती हैं जो कायर और दुर्बल होते हैं। राना ने समझा कि जब अलाउद्दीन मेरे महल में कतिपय सैनिकों के साथ इस प्रकार निःशंक होकर चला आया, तो फिर मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिये। अतएव उसने अलाउद्दीन की इस शर्त को स्वीकार कर लिया कि मैं तुम्हें पहाड़ी की तराई तक पहुँचा दूँगा और यह कह कर बादशाह के साथ चल पड़ा। पापी अलाउद्दीन का संकेत पाकर सैनिकों ने महाराणा को पकड़ लिया और उसे अपने शिविर में ले गए।

जिस समय ये समाचार चित्तौड़ में पहुँचे, सब लोगों के होश उड़ गये। महारानी पद्मिनी की दशा बड़ी शोचनीय थी। इतने में पापी दुराचारी अलाउद्दीन ने कहला भेजा कि पद्मिनी को हमारे डेरे में पहुँचा आओ, नहीं तो भीमसी का बन्दीगृह से मुक्त होना सर्वथा असम्भव है। इस समाचार से राजपूतों में एक आग सी लग गई। रानी की छाती पर शोक का पहाड़ टूट पड़ा। उसको जितना दुःख हुआ, उसे हम लेखनी द्वारा प्रकट नहीं कर सकते। उसके मुख की कान्ति जाती रही, नेत्रों की ज्योति मन्द पड़ गई, काटो तो शरीर में रक्त की बूँद नहीं। कहाँ वह इतनी रूपवती थी कहाँ उसकी

करने को तैयार हैं, परन्तु यह जानती है कि अब मैं जाऊँगी तो अपनी साथी सहेलियों को भी साथ में लाऊँगी। यदि यह आज्ञा दें तो मैं चलने को तैयार हूँ।

दूत के साथ एक राजपूत भी गया। ज्योंही अलाउद्दीन ने सुना कि पद्मिनी आने को तैयार है, उसके हर्ष का कोई पारावार न रहा। मुँह माँगा वरदान मिल गया, भला हर्षित क्यों न होता! जिसके लिये वह अपने राज्य तक को मिट्टी में मिलाने के लिये तैयार था, वह केवल भीमसिंह के पकड़े जाने पर स्वयं आ रही है। यदि अब भी वह प्रसन्न न होता तो फिर कब होता! वह मन से बहुत हर्षित हो कहने लगा, मुझे आज जितना हर्ष सम्भव है, पद्मिनी के न आने का। अब मुझे एक एक पल भारी हो रहा है। जा कर कहो, उसे तुरन्त यहाँ लावें। क्योंकि अब तो वह न केवल मेरे राज्य की स्वामिनी है किन्तु मेरे मन और तन की भी स्वामिनी है। इतना सुनना था कि राजपूत बोल उठा—महाराज! महारानी के साथ कुछ हथियारबन्द राजपूत भी आवेंगे। अलाउद्दीन ने हँसकर कहा—राजपूत सरदार! तुम विश्वास रक्खो, रानी के यहाँ कुछ नहीं हो सकता। मेरी आज्ञा ईश्वरीय आज्ञा से भी बढ़कर है। किसी का क्या साहस है कि वो मेरे सामने चूँ भी कर सके।

राजपूत ने चित्तौड़ पहुँच कर सारा समाचार महारानी से कहा और सबों को सुनाया। तब रानी ने [illegible] की तैयारी

अलाउद्दीन पद्मिनी के प्रेम से उन्मत्त हो रहा था। उसे अपने तन बदन का सुध नहीं थी। उसने सोचा कि अब रानी यहाँ से कहाँ जा सकती है। बस, दो घड़ी के लिये राजा को बन्दीगृह से मुक्त करा दिया और इधर रानी जो एक पालकी में बैठी हुई थी, राजा के पास आई। अलाउद्दीन यहाँ धर्मशाला में पद्मिनी के आने की द्वार पर बाट देख रहा था। नौकरों को यह आज्ञा दी गई थी कि विवाह के लिये इसी को यहाँ के भीतर एक अत्यन्त सुन्दर मण्डप तैयार कर दो। जब दो घड़ी बीत गई और रानी नहीं आई, तो उसके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा और वह बेधड़क उसी कमरे में चला गया, जहाँ राजा कैद था, पर यहाँ कोई नहीं मिला। केवल एक राजपूत हथियार बन्द खड़ा था। ज्यों ही वीर राजपूत ने अलाउद्दीन को देखा त्यों ही उसने तलवार का आक्रमण कर दिया। अलाउद्दीन मन में डर कर चिल्लाने लगा और जोर से चिल्ला उठा कि हा! रानी ने धोखा दिया। यह सुनते ही मुसलमान सिपाही डेरे की ओर दौड़ पड़े। यह समय बड़ा नाजुक था। बादल ने ललकार कर कहा, हे बहादुर राजपूतो! अब समय आ गया है देखो ये दुष्ट बचकर जाने न पावें। इस शब्द के सुनते ही राजपूतों के बहादुर सामन्त जो पालकियों में सवार होकर आये थे, तुरन्त बाहर निकल आए। चारों ओर से तलवारें की खट-खटकने लगीं। बारह वर्ष का लड़का बादल अलाउद्दीन पर

हुई। जिस समय उसकी धर्मपत्नी ने यह समाचार सुना था, तुरन्त उस के साथ सती होने को तैयार हो गई और उसका सिर गोद में लेकर चिता में बैठ गई। अनेक राजपूत उस महापुरुष के दर्शनों को आए। उनमें सती का इकलौता पुत्र बादल भी था। सती ने अपने पुत्र को सम्बोधित करके कहा, बादल! तेरे पिता ने किस प्रकार क्षत्री धर्म का पालन किया? चतुर चपल बालक ने उत्तर दिया—"माता! पिता जी ने इस प्रकार शत्रुओं का विध्वंस किया जिस प्रकार किसान अपने खेत को एक ओर से काटता है। मैं उनके साथ चलकर उनकी वीरता के अद्भुत और आश्चर्यजनक दृश्यों को अपने हृदय पट पर अंकित करता जाता था। लाखों मनुष्य रक्त की नदी में डूबते थे। जब अन्त समय आ गया तो वे आराम से लाशों पर लेट गये और एक लाश का तकिया बना कर रण में सो रहे।

उस आदर्श और धर्मात्मा सती ने एक बार फिर मुस्करा-कर पूछा, बेटा बादल! अपने पिता का वीर-वृत्तान्त एक बार फिर वर्णन करो। मेरे प्राणपति ने किस प्रकार रण में क्षत्रिय-धर्म का पालन किया? दूसरी बार बादल ने इस प्रकार वर्णन किया कि जब शत्रुओं की सेना में कोई तलवार नहीं हुआ जो उनका सामना करता, तब वे थक कर आराम करने के लिए लेट गये और स्वर्ग और आनन्द के साथ उन्होंने स्वर्गधाम का मार्ग लिया। सती इस बार का वर्णन सुनकर

सारे बहादुर जोश में आगए। यद्यपि संख्या में वे उतने नहीं थे, तथापि उनकी वीरता ने वे गुण दिखाए कि अलाउद्दीन को जान बचाकर भागने ही में भलाई जान पड़ी।

अलाउद्दीन की पराजय हुई थी। चाहिये यह था कि वह चुपचाप अपने विचार को त्याग देता, परन्तु नहीं, दिन प्रति दिन उसका विचार दृढ़ होता गया और इस बार उसने यह संकल्प कर लिया कि जब तक मेरा या राजपूतों का निर्णय न हो जावेगा, मैं कदापि दिल्ली लौट कर नहीं जाऊँगा। यह घटना १४ वीं शताब्दी की है।

अलाउद्दीन ने चित्तौड़ को जीतने का दूसरा प्रयत्न किया। इस समय किशोर लखमसी का देहान्त हो चुका था। उसके स्थान में चित्तौड़ वासियों के विशेष आग्रह से महाराणा भीमसी राज्य सिंहासन पर सुशोभित हुए थे; परन्तु मुसलमानों के चढ़ाई करने के कारण चित्तौड़ की दशा कुछ ऐसी पतित हो गई थी कि वे उस समय लड़ने के लिये तैयार नहीं थे। कुछ दिनों तक मौन और शान्ति के साथ विश्राम करना चाहते थे। इस समाचार को सुनकर वे अधीर हो गए थे; परन्तु महारानी पद्मिनी ने सब को ढाढ़स देकर कहा, "वीरो! ईश्वर उनकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। उठो, हतोत्साह मत हो। क्षत्रियों को रणभूमि से हटना शोभा नहीं देता। जाओ, रणक्षेत्र में शत्रु से जी खोल कर लड़ो।" इतना सुनना था कि सब के सब बहादुर जोश

दिन का कुछ समय बीतने पर लखमसी आसन पर पड़ा सो रहा था कि इतने में उसे ये शब्द सुनाई दिये कि "मैं भूखी हूँ।" इतना सुनते ही लखमसी जाग पड़ा। उसने देखा कि एक स्त्री उसके सामने खड़ी हुई इस चित्तौड़ गढ़ की बढ़ रही है। राणा ने उसकी ओर देख कर प्यार से कहा, "हे चित्तौड़ की देवी! मेरे आठ सौ हज़ार सरदार मारे गये, क्या अब भी तू तृप्त नहीं हुई?" वह बोली, "मैं राजसी बलिदान चाहती हूँ। यदि तेरे बारह बेटे राजसी मुकुट धारण किये हुये रणभूमि में लड़कर प्राण न देंगे तो चित्तौड़ की गद्दी पर वह राज्य करेगा जिसके सन्तान न होगी।"

इन शब्दों का यह अर्थ था कि लखमसी के बारह पुत्र लो लड़ने के लिये तैयार हो जावें जिससे राजपूतों का राज्य बचा रहे। सवेरा होते ही महाराणा ने यह बात सबको सुनाई; परन्तु किसी को विश्वास न हुआ। सब ने हँस कर कहा, महाराजा आप को धोखा हुआ होगा। इस पर राणा ने कहा कि आज सब लोग आधी रात के समय मेरे शयनागार में उपस्थित रहें। आज्ञा पालने में भला किसको इनकार हो सकता था! जब आधी रात का समय आया, तो वही स्त्री सब को यह कहती हुई दिखाई दी कि "अपने पुत्रों को एक एक करके राजसी मुकुट पहिना और उन्हें रण में बराबर भेजता जा। ऐसा करने से चित्तौड़ पर तेरे वंश का अधिकार रहेगा।" अब सब राजपूतों ने अपनी आँखों से देख लिया

न पाँच वर्ष की थी। राजा ने आज्ञा दी कि इसको लड़ने लिये न भेजा जाय जिससे वंश का नाम सुरक्षित रहे।

जब ये अमूल्य बलिदान हो चुके और कोई आशा जने की दिखाई न दी, तो राजा ने जौहर की आज्ञा की। हर उस समय किया जाता था, जब कोई आशा जीने की रहती थी। वीर राजपूत मरने जीने की आशा को छोड़ कर नी तलवारें लेकर कूद पड़ते थे और मरने मारने के लिये यार हो जाते थे। राजपूतनियाँ अपना पतिव्रत धर्म बर रखने और नातेदारों का साहस बढ़ाने के लिये चिता बैठकर राख की ढेर हो जाती थीं।

महारानी पद्मिनी ने सब स्त्रियों को बुलाया और कहा बहिनो! राजपूत आज रण शय्या पर सो रहे हैं। अब हमारे लिये और कोई चारा नहीं, यह आग जल रही है। यह मको आवाहन कर रही है। आओ हम सब बहादुरी के साथ सी पर चढ़ जावें।" राजपूतनियों के चेहरे पर दुख के चिह्न न थे। वे सब प्रसन्नता के साथ अग्नि पर बैठ गईं। उन तब के बीच में प्रसिद्ध सुन्दरी पद्मिनी भी थी। चारों ओर द्वार बन्द कर दिये गये। एक शब्द भी कहीं सुनाई नहीं देता था। सर्वत्र शान्ति विराजमान थी। किसी को भी मृत्यु की चिन्ता नहीं थी, क्योंकि सब स्त्रियाँ जानती थीं कि यह बलिदान है और बलिदान अच्छा फल दिखाए बिना नहीं रहता।

चिता में आग दे दी गई और देखते देखते इस संसार

[illegible]

[illegible]

दूसरी चढ़ाई

महारानी कर्णावती

——०:०——

राणा संग्रामसिंह तीन भाई थे। राणा रायमल और पृथ्वीराज पहले मर चुके थे। उनके पीछे संग्रामसिंह ने चित्तौड़ के सिंहासन को सुशोभित किया। भाई के वियोग से संग्रामसिंह बड़े दुःखी हुए। कहावत है कि 'भाई बाहु बल है।' [illegible] का स्वरूप है। इस वियोग से उनकी क्या दशा हुई होगी किन्तु क्या हो सकता था! जीवन मृत्यु का प्रवाह है। जो आया वह अवश्य जायगा, प्रातः काल के बाद मध्याह्न और उसके उपरान्त रात्रि, यह संसार का नियम है। पृथ्वीराज और राणा रायमल के मरने के पश्चात् इनको राज-काज में दिलचस्पी नहीं रही। राज्य के कारोबार को छोड़कर [illegible] और [illegible] को बहुत [illegible] कार्यालयों भार सौंपने के कारण इस प्रकार के झगड़ों के पैदा करने के योग्य हो गया था। वह साहसी, तीव्र बुद्धि, दूरदर्शी और वीर राजा था।

जिस समय संग्रामसिंह [illegible] सिंहासन पर आरूढ़ हुए,

...हाई में उनकी एक टाँग भी गोले से उड़ गई थी।
...गह में भिन्न भिन्न स्थानों पर कम्पनी गोलियों के...
, परन्तु अंगहीन होने पर भी संग्रामसिंह के ना...
म थर थर काँपते थे। जहाँ उनका शुभ संस्कार...
हुआ था वहाँ एक छोटा सा चबूतरा और एक मंदिर उस...
स महापुरुष की स्मृति में बना हुआ है।

कर्णावती उनकी सब से छोटी रानी थी। यह सब...
अधिक सुन्दर और धर्मशीला थी। राणा भी इन से अधिक...
हित करता था। वहाँ राणा रानी का [illegible] भी था। [illegible]
है कि एक दिन [illegible] ऐसा व्यवहार करते देखा [illegible]
[illegible] इस [illegible] यद्यपि वह पुरुष तो था, [illegible]
हुए थे। टाँग टूट गई थी, आँख फूटी थी, हाथ टूटा था,
[illegible] शरीर में अस्सी घाव लगे हैं! किसी ने सच कहा है कि
[illegible] जाता है, [illegible] [illegible] जाता है, [illegible]
[illegible] [illegible] दिखाई देते हैं। [illegible] इसी प्रकार उनकी
[illegible] [illegible] करती थी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] करता है, परन्तु [illegible] की सेवा करने का
[illegible] [illegible] नहीं किया। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] हुआ।

[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उस समय मेवाड़ की दुर्व्यवस्था देख कर गुजरात के ...दुर सुलतान ने चढ़ाई कर दी। कारण यह था कि राणा ...मसिंह ने उसके पिता मुज़फ्फ़र को बन्दी कर लिया ...। विक्रमादित्य ने लड़ने का विचार किया; परन्तु सेना की ...ा बड़ी शोचनीय थी। कुछ लोग शत्रु से भी जा मिले थे। ...। निडर राजपूत मुसल्मानों के साथ मिल कर मेवाड़ ...लड़ने के लिये आये तो करुणावती ने रणभूमि में खड़े ...कर उच्च स्वर से कहा—'नपुंसको! अपने राजा के प्रति ...ई कृतघ्नता! बड़े शोक और लज्जा की बात है।' उसी ...मय राजपूतों का विचार बदल गया और सेनापति ने खड़े ...कर कहा कि हम केवल उदयसिंह को बचाने के लिये ...ाये हैं कि जिससे विक्रमादित्य से उसे कोई हानि न पहुँचे। ...नी करुणावती ने फिर बुरा भला कहा और उसका बहुत ...छ प्रभाव पड़ा।

बहादुर यह बात देख कर घबड़ा गया किले के घेरने का विचार करने लगा। राजस्थान के लेखक टाड साहब राजस्थान में लिखते हैं कि चित्तौड़ के नाम में एक विशेष प्रकार का जादू था और वास्तव में यह सत्य भी प्रतीत होता है। भारत में कोई ऐसा देश नहीं है जिसकी इतनी सहायता की गई हो। क्या पुरुष और क्या स्त्री सभी ने जीवन और धन का विचार छोड़ कर चित्तौड़ को फला फूला रखने का भरसक प्रयत्न किया।

धर्मात्मा और वीरा कर्णावती ने राजपूतों के पिछले दुर्व्यवहार का ध्यान न करते हुये सिपाहियों की कमान अपने हाथ में ले ली और राजपूतों को ललकार ललकार कर सहायता को बुलाया। जिस समय वह बोल रही थी यह ज्ञात पड़ता था कि मानों सिंहनाद हो रहा है। कुछ के शब्दों में सुरीलापन था और कुछ आत्म-गौरव और स्वदेशाभिमान का जोश था। सब के सब मरने के लिये तैयार हो गये। देखते देखते हज़ारों की संख्या में राजपूत इकट्ठे हो गये और सब के सब क़िला के बचाने की चिन्ता में लग गये। निस्सन्देह यह केवल राजपूतों का ही काम था।

बहादुर के पास काफ़ी सेना थी। तोपख़ाना भी बहुत बड़ा था। महीनों लड़ाई होती रही और रानी का और वीरता देखकर राजपूत भी बराबर डटे रहे। राजपूत जी खोल कर लड़े, परन्तु कहाँ वो और कहाँ हम। विवश होकर राजपूत हतोत्साह होगये और यह निश्चय किया कि बहादुर के पास क़िला कि कुंजी भेज दी जाय। जिस समय रानी ने ये शब्द सुने, वह क्रोधित होकर बोली, "क्यों? क्या राजपूतनियों की छाती का दूध पीकर राजपूत इसी प्रकार बात किया करते हैं? स्मरण रहे, मैं केवल तुम्हारे राजा ही की माता नहीं हूँ, किन्तु तुम्हारी भी माता हूँ। माता की लज्जा और धर्म की रक्षा करो और सपूतों की भाँति लड़ मर कर माता के साथ प्राण गवाँ दो।"

इस बात का कौन उत्तर देता? राजपूत जानते थे कि अब क़िले के छीने जाने में कोई कसर नहीं रही है। रानी । बहादुर राजपूतों का क़िले के चारों ओर खड़ा कर दिया उस दिन रक्षा बन्धन का त्यौहार था। उसने एक राजपूत को बुलाकर उसके हाथ में राखी बांधी और कहा कि यह पत्र और राखी ले जाकर दिल्ली के सम्राट को देना और मेरा प्रणाम कहना। पत्र में यह लिखा था।

"भाई हुमायूँ!

इस समय तुम्हारा भानजा घोर विपदा में है। तुम आकर उसे इस विपदा से बचाओ और अपनी बहिन की भी रक्षा करो। मेवाड़ राज्य के काम आओ। मैं आज से तुम को अपना राखी बंद भाई समझती हूँ!

विपदा ग्रसित—कर्णावती

राखी की प्रथा भारत में प्राचीनकाल से प्रचलित है। जब कभी किसी अबला पर कोई विपत्ति आती थी, तो वह किसी व्यक्ति के पास जिसको वह योग्य समझती थी, राखी भेज देती थी और वह यथासम्भव उसकी रक्षा किया करता था। यह कभी नहीं सुना गया कि किसी हिन्दू ने इनकार कर दिया हो।

जिस समय राखी भेजी गई थी, हुमायूँ दिल्ली में मौजूद नहीं था। वह बङ्गाल में शेरशाह से लड़ रहा था राखी पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। बंगाल की लड़ाई उसने बन्द

कर दी और एक बड़ी भारी सेना लेकर धावा मारता हु चित्तौड़ आ पहुँचा, परन्तु उसके पहुँचने में कुछ दे गई थी। गढ़ जीता जा चुका था, राजपूतों ने एक एक का जान दे दी थी। वे अन्त समय तक बराबर लड़ते और रानी अपनी वीरता से उनके साहस को निर बढ़ाती रही।

सरदार मारे गए। बाघ जी को राजा बनाया। मेव का झंडा उसके सिर पर लहराने लगा। टाड साहब लिख हैं 'कि जिस जोश खरोश और धमक दमक से मेवाड़ झंडा उस दिन लहरा रहा था शायद वैसा कभी न लहराया।' बाघ जी भी मारा गया। यह सूरजमल का बे था। उसने खुशी से [illegible] मरने के लिये राज्य पदवी धारण किया था।

अन्त में जब हुमायूँ समय पर न आ सका और रानी समझा कि यह किसी आवश्यक कार्य के कारण नहीं आया और अब बचने की कोई आशा न रही, तो उसने सब सरदा को इकट्ठा किया और कहा:

"वीर पुत्रो!

तुमने बड़ी वीरता और दृढ़ता से शत्रु का सामना कि इसलिए तुम्हारी माता तुम से बहुत प्रसन्न है और तु आशीर्वाद देती है। परन्तु पुत्रो! तुम यह न समझो मेरा है अन्त समय में राजपूतों के नाम को बट्टा लगाऊँगी

कदापि नहीं। लो यह तलवार हाथ में लो और शत्रुओं को मारते काटते सिंह के समान प्राण दे दो। यही तुम्हारा सच्चा जीवन है।"

इन बातों को सुन कर राजपूतों का जी भर आया। उन्होंने कहा कि उदयसिंह को किसी और स्थान पर चले जाने की आज्ञा दे दीजिये। रानी ने उनकी ओर प्रेम भरी दृष्टि से देख कर कहा—"पुत्रो! मेरी दृष्टि में तुम और उदयसिंह दोनों बराबर हो। मैं उसमें और तुममें कोई भेद नहीं समझती। इस कारण तुमको अधिकार है कि जो उचित समझो करो और जहाँ उचित समझो वहाँ उसे भेज दो।"

राजपूतों ने यह विचार किया कि उदयसिंह को उसके नाना के यहाँ बूँदी में भेज दिया जाय कि जिस से उस नवीन खिलती हुई कली के फूलने फलने की आशा हो सके। अतएव उदयसिंह को बुलाया गया और उस से कहा गया कि भाई तुम बूँदी चले जाओ, कुछ सिपाही तुम्हारे साथ किये देते हैं। उदयसिंह इतना सुनते ही चिल्ला कर दौड़ता हुआ माता के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—'माता! मुझे भी अपने साथ मरने दो।' रानी ने कहा—"नहीं बेटा! तुमको राजा बनना है। इसलिये जो राजपूत कहें, वही करो, परन्तु आज का दिन स्मरण रखना।"

यद्यपि ये बातें रानी ने कुछ कठोरता से कहीं थीं, परन्तु जो लोग माता के प्रेम से परिचित हैं, वे स्वयं अनुमान कर

सब चुप हैं, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। यदि उस समय सुई भी गिरता तो उसका शब्द स्पष्ट सुनाई देता। अग्नि धीरे धीरे नीचे नीचे शान्त हो रही है। महारानी कर्णावती सब के बीच में इस प्रकार बैठी हुई हैं जिस प्रकार तारागण के बीच में चन्द्रमा रहता है। सब शांति और मौन के साथ एक विशेष समय की प्रतीक्षा कर रही हैं कि इतने में तड़ाक तड़ाक के शब्द सुनाई दिये। तेज प्रकार देवियों के शरीर से प्राण की चिनगारियाँ निकलने लगीं और उनका धुआँ आकाश पर किसी.........के दर्शनों स्वागत करने के लिये उड़ने लगा।

राजपूतों ने जब यह दृश्य देखा तो उनके नेत्रों में रक्त उतर आया। बाघ का देखना जो भोजन करने के लिये ताड़ता बना था; उन्होंने बचे खुचे सैनिकों को लेकर एक उन्मत्त की नाईं बहादुर पर झपटा। जिस प्रकार समुद्र की लहरें बड़े वेग से बढ़ती हैं और किसी की परवाह नहीं करतीं, ठीक यही दशा राजपूतों की भी थी। वे आगे बढ़े हुए चले जा रहे थे; परन्तु उनकी संख्या थोड़ी थी, इसलिये उन्हें सफलता नहीं हुई, फिर भी उन्होंने हज़ारों को तलवार के घाट उतार दिया। एक राजपूत या राजपूतनी भी लौट कर गढ़ में नहीं गई। सब वहीं के वहीं ढेर हो गए।

अब पाजी बहादुर सुलतान ने नगर में प्रवेश किया, परन्तु वहाँ क्या था? लाश तक भी नहीं थी। लाश भी राख में परिवर्तित होगई थी। स्त्रियाँ चिता में बैठ कर जल चुकीं

राणा उदयसिंह

—०—

चित्तौड़ में आकर हुमायूँ ने विक्रमादित्य को फिर सिंहासन पर बैठा दिया था, पर विक्रमादित्य ने विपत्ति से कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। जिस निष्ठुरता से वह अपने पहले सरदारों के साथ व्यवहार करता था, उसमें उसने किसी प्रकार कमी नहीं की वरन् वृद्धि की। सरदार उस से बड़े दुःखी थे। चित्तौड़ लौट आने पर उनको आशा थी कि वह अपने स्वभाव को छोड़ देगा; परन्तु जिसका जैसा स्वभाव बन जाता है वह कहाँ छूटता है। दिन दूना रात चौगुना उसका बुरा स्वभाव बढ़ता गया। कुछ समय तक बिचारे सरदारों ने संतोष किया और अनेक प्रकार की आपत्तियाँ और कठिनाइयाँ सहन कीं; क्योंकि उस समय उसके अतिरिक्त मेवाड़ की गद्दी पर राज्य करने वाला कोई दिखाई नहीं देता था, पर संसार में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका एक दिन अन्त न हो।

एक दिन की बात सुनिये। सरदार लोग सभा में एकत्र थे। महाराज भी राज्य सिंहासन पर आरूढ़ थे। बातों बातों में उनके क्रोध की ज्वाला भड़क उठी और अजमेर के अमरसिंह नामक एक वृद्ध सरदार को उन्होंने भरी

बुलवा भेजा। वह राजा नहीं हो सकता था क्योंकि वह राजा की दासी से पैदा हुआ था, इस कारण उसे सेनापति बनाने का विचार था। बनवीरसिंह को कुछ संकोच हुआ। उसने इस विचार को पसन्द नहीं किया, परन्तु उसे मेवाड़ की गद्दी का कोई अधिकार नहीं था। भला राजसी मुकुट दासी के पुत्र के मस्तक पर कैसे रक्खा जाता?

दूत खाली हाथ लौट आया। सरदारों ने फिर कहला भेजा कि मेवाड़ को एक बलवान योद्धा राजपूत के संभालने की आवश्यकता है। जब मेवाड़ के सरदार उसे बुला रहे हैं तो उसका इस प्रकार इन्कार करना राजपूती शान को शोभा नहीं देता। मेवाड़ के राजपूतों को पूरी आशा है कि बनवीरसिंह अवश्य राज्य का प्रबन्ध कर लेगा। इस लिये अब बनवीरसिंह के पास कोई उत्तर नहीं रहा था। उसने सरदारों की बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु गद्दी पर बैठते ही उसका हृदय पलट गया। उसने सोचा कि जब तक उदयसिंह मर न जायगा तब तक मैं पूरी तौर से सुख न भोग सकूँगा। उसने सोचा कि विक्रमादित्य को भी मार डालना उचित है। इसलिये वह रात होने की बाट देखने लगा।

उस समय बालक उदयसिंह इन सब षड्यन्त्रों से अलग महल में खेल रहा था। वहाँ खाता पीता, सोता

और खेलता रहता था। उसकी धाय का नाम पन्ना था। पन्ना का इकलौता बेटा उदयसिंह का साथी था। सं का समय था, नाई कमरे में खाना लाया। उदयसिंह खाकर आराम से बेसुध पड़ा सो रहा था और उसका स भी उसके पास ही सो रहा था। धाय सामने ही बैठी दोनों बच्चों को प्रेम की दृष्टि से देख रही थी।

इतने में भीतर से रोने चिल्लाने की आवाज़ आई। सुन कर पन्ना का सिर चकरा गया। वह घबड़ा कर खड़ी हुई। स्त्रियों के रुदन-क्रन्दन से सारा महल गूँज उ चारों तरफ़ उदासी छागई। दीवारें हिलती मालूम ह थीं। यह हाहाकार कोई साधारण नहीं था। शब्दों से म होता था कि कोई मर गया है और उसका शोक मन आ रहा है। नाई भी आश्चर्य में था। भय से उसके भूमि में गड़ जाते थे। क्या पन्ना इस भेद से परि नहीं थी? क्या महल के किसी कोने में बैठे रहने से उ इधर उधर के समाचार नहीं मिलते थे? सरदार बनवी अपने हाथ से विक्रमादित्य का काम तमाम कर दिया। यही कारण था कि स्त्रियाँ इतने उच्च स्वर से रुदन रही थीं।

पन्ना का कोमल हृदय काँपने लगा। वह निराश दोनों की ओर टकटकी लगाये हुये देख रही थी। उसको विश्वास था कि जब तक राणा साँगा का दूसरा पुत्र जी

दुष्ट हत्यारा कभी शान्ति से न बैठेगा। उसने उसी समय
ते हुये बच्चे को उठा लिया। उसके शरीर पर से बहुमूल्य
त्रों को उतार लिया और उसे टोकरे में रख कर नाई से
हा कि जा, इसे अमुक नदी के किनारे रख आ, ऊपर से
क्ष के सूखे पत्ते डाल देना, मैं भी अभी आती हूँ। नाई ने
करा उठा लिया और किसी मार्ग से निकलता हुआ नदी
ी ओर चला। चौकीदारों ने समझा कि बचा खुचा खाना
अपने बाल बच्चों के लिये लेजाता होगा, इसलिये किसी ने
ोक टोक नहीं की। नाई तो पहुँच गया, परन्तु पन्ना के हाथों
े अभी बड़ा बलिदान होना रह गया था। उसने उदयसिंह
े कपड़े अपने पुत्र को पहिना दिये और आप एक कोने में
छुप कर बैठ रही।

उसको अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। शीघ्र किसी
आने वाले के पांव की आहट सुनाई दी, उसने कमरे के पर्दे
को उठा कर पन्ना से पूछा, राजकुमार कहाँ है उसे शीघ्र
दिखा दे ?

थोड़ी देर तक उसका कलेजा काँपता और धड़कता रहा,
मानो उसके मुँह पर किसी ने मोहर लगा दी थी। वह एक
शब्द भी न कह सकी। कुछ देर के बाद उसने हाथ से पलंग
की ओर संकेत कर दिया जिस पर उसका पुत्र लेटा हुआ था।
हा! एक चमकती हुई तलवार ने भोले भाले निरपराधी
बालक के कलेजे में घुस कर क्षण भर में उसका खून पी

न थी। राजपूत क्या नहीं कर सकते। उसने उदयसिंह की
करके अपने नाम को चित्तौड़ के इतिहास में, भारतवर्ष
तिहास में, नहीं संसार के इतिहास में सदैव, के लिये
अक्षरों में अंकित करा दिया। जब तक संसार है तब
पन्ना के यश की विमल ध्वजा पताका फहराती रहेगी
उसकी कीर्ति की माला जपी जायगी।

उदयसिंह कहाँ का कहाँ पहुँच गया था, परन्तु यहाँ उस
मृतक-संस्कार किया गया था। पन्ना ने विदा होने की
मांगी। अब भला उसका महल में क्या काम था?
बच्चे की वह धाय थी, वह प्रत्यक्ष में मर चुका था।
को आज्ञा मिलगई। वह बेचारी अपना सामान उठा कर
दी और सदा के लिये महल से विदा होगई।

नगर से कुछ दूरी पर नदी की सूने रेत में उसने नाई
टोकरे के पास बैठा हुआ पाया। बच्चा नींद में चूर था।
वहाँ से बच्चे को लेकर उसी समय चल दी और उन
कर पहाड़ी मार्गों में से होकर जहाँ मर्दों की हिम्मत चलने से
जाती थी, वह देवल पहुँची। वहाँ बाघजी का पुत्र रहता
जो किसी समय चित्तौड़ की सहायता में काम आ चुका
पन्ना ने राजकुमार को उसके पास रखना चाहा। सरदार
पन्ना के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया परन्तु उसने यह
साफ़ साफ़ कह दी कि मैं उदयसिंह को शत्रुओं से बचा
नहीं रख सकता। देवल चित्तौड़ के बहुत ही निकट है।

[illegible] और [illegible] के [illegible] था [illegible] । [illegible] के [illegible] के [illegible] था, [illegible] था । [illegible] के [illegible] [illegible] हैं और [illegible] के [illegible] [illegible] है [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] का [illegible] की [illegible] का [illegible] किया । [illegible] ; [illegible] में [illegible] और [illegible] की [illegible] [illegible] है [illegible] के [illegible] और [illegible] । [illegible] में [illegible] । [illegible] ने [illegible] कि [illegible] है [illegible] का [illegible] है, [illegible] की [illegible] की [illegible] । [illegible] है [illegible] के [illegible] की [illegible] । [illegible] कि [illegible] — [illegible] है । [illegible] के [illegible] है । [illegible] है कि [illegible] के लिये [illegible] है [illegible] और [illegible] है । [illegible] है [illegible] है । [illegible] की [illegible] है [illegible] और [illegible] की [illegible] । [illegible] के

है। मेवाड़ के सरदार उदयसिंह की मौत पर हाथ
कर पछताते थे। वह दिन बड़ा ही अशुभ था जिस
सरदार को मेवाड़ के सिंहासन पर बैठने का अवसर
दा था। परन्तु अब क्या हो सकता था, अपने किये
ल ही क्या है?

जानते थे कि राणा साँगा का वंश नाश होचुका है।
स वंश का आरम्भ होना असम्भव है। ज्यों त्यों करके
सात वर्ष बड़ी कठिनाई से व्यतीत किये।

क बार किसी त्योहार उत्सव के दिन कमलमेर के क़िले
मनाया जारहा था। आशाशाह के समस्त सम्बन्धी और
र वहां उपस्थित थे। खाने पीने और उठने बैठने का
। प्रबन्ध था। राजपूत सरदार अपने अपने स्थान पर
और सताप के साथ बैठे हुये थे। आशाशाह के भतीजे
ो का कटोरा अपने हाथ से उठा लिया जो केवल
गों ही का काम था। लोगों ने उसे बहुत धमकाया
तु वह खड़ा हुआ हँसता ही रहा। उससे बहुत कुछ कहा
और उसकी प्रशंसा भी की गई, परन्तु उसने एक भी न
।। यह देखकर अतिथियों ने कहा कि आशाशाह इस हठी
के को अपने यहां सें करना भी नहीं जानता। सभा में
चतुर और बुद्धिमान् पुरुष भी बैठे थे ... ों ने कहा
। पुत्र में आशाशाह के वंश के कोई ... पाये जाते।
न निश्चय जानो यह कदापि ... होता नहीं है।

ों से यह प्रथा नहीं चल सकी। एक बार जब उसने
किया तो सरदार चन्दावत ने उसके लेने से इन्कार कर
। और कहला भेजा कि बाप्पारावल की सन्तान से जिस
। का लेना उचित था, अब दासी के पुत्र के हाथ से उसका
उचित नहीं है।

राजपूत योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। उदयसिंह के
मान होने का समाचार सुनकर वे और भी जोश में
गये। जब कमलमेर में मेवाड़ के मुख्य मुख्य योद्धाओं का
ार हुआ तो पन्ना नाई को साथ लिये हुये वहाँ आई और
ने रो रोकर अपना हाल सुनाया और शपथ पूर्वक कहा
यह राणा साँगा का असली पुत्र उदयसिंह है। मैं इसको
ोड़ से भगा लाई थी। जिस बालक को बनबीर ने मार
ा था, वह मेरा लड़का था। आशाशाह ने उसी समय
यसिंह की रक्षा का भार चौहान वंश के एक मुखिया
ुपुर्द किया जो सब सरदारों में योग्य समझा जाता
और जिससे पन्ना ने यह भेद प्रकट कर रक्खा था।
दार ने उदयसिंह को छाती से लगा कर गोद में बिठा
या और उसके साथ एक ही थाल में भोजन किया।
नन्तर उदयसिंह को तिलक चढ़ाया गया और सब सरदारों
भेंट दी।

राजपूतों के झुंड के झुंड चारों ओर से आने लगे। रसद
सामान भी शीघ्र एकत्र किया गया। सोनगढ़ के रईस

न्तु जब उसकी सारी सेना उदयसिंह की सेना में जा
मी, तो वह चित्तौड़ की ओर भाग गया।

यदि बुद्धिमानी से काम न लिया जाता तो सम्भव था
चित्तौड़ का क़िला वर्षों में भी विजय न होता। बनबीर
सेनापति राणा सांगा का सुत विक्रम था। उसने ऐसा
न्ध किया कि एक दिन जब क़िले में सामग्री आ रही
। और बहुत सी गाड़ियाँ क़िले में चली गईं, तो उनमें से
क हज़ार राजपूत निकल पड़े। क़िले वालों ने उनका
ड़ा किया परन्तु मारे गए। उनमें बहुत से क़ैद भी कर
िये गए। उदयसिंह ने बड़े हर्ष से अपने क़िले में प्रवेश
या। अब फिर क्या था, उसके नाम की तोपें धड़ाधड़
ूटने लगीं।

यदि बनवीर के साथ वही व्यवहार किया जाता, जो
सने विक्रमादित्य के साथ किया था, तो बहुत ही अच्छा
ोता, परन्तु राणा के सैनिकों ने कहा कि यह हमारे बुलाने
र आया था, इसलिये इसको क्षमा कर देना चाहिये। राणा
े उसे क्षमा कर दिया। बनबीर अपने कुटुम्बियों के साथ
क्षिण की ओर चला गया और वहाँ उसकी सन्तान बहुत
दिनों तक जीवित रही।

ने अपनी लड़की भी इसे ब्याह दी। यह पहला राजपूत था जिसने मुसलमानों के साथ सम्बन्ध करके राजपूतों का मिटाया और कलङ्क का टीका लगाया। फिर क्या मार्ग खुल गया। अन्य राजाओं की भी एक एक कर बर ली गईं और उनमें से बहुत से अकबर के साथ गये।

अकबर में मत मतान्तर का पक्ष नहीं था और न वह उनके नेक सिद्धान्तों का खंडन करता था। उसने जज़िया* कर बन्द कर दिया था और हिन्दू यात्री स्वतन्त्रता से तीर्थों पर सकते थे, परन्तु राजपूतों में ऐसे ऐसे महापुरुष भी थे जो से मिलना नहीं चाहते थे। उनमें से एक उदयसिंह भी। उसका यह ढङ्ग किसी अभिमान से नहीं था, किन्तु वह ई और आलसी था। वह एक स्त्री के जाल में फँस गया था र जब तक वह स्त्री उसके पास रही, उसने कोई भी काम हीं किया। अकबर ने मालवे के नव्वाब बाज़ बहादुर पीछा किया था। उदयसिंह ने बाज़बहादुर को मूर्खता से ने यहाँ ठहरा लिया। इसका बदला लेने के लिये अकबर मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा चित्तौड़ में घिर गया, न्तु उसने यह नहीं सोचा कि अब क्या करना

मुसलमान बादशाह ने हिन्दुओं पर कर लगाया था। या वे इस्लाम धर्म्म को स्वीकार या हिन्दू होने का कर चुकावें। सको जज़िया कहते हैं।

ग्रतों श्रौर भयंकर वीरता से मुग़ल सेना पर टूट पड़ीं। तलवारों ने हज़ारों मुसलमानों के सिर धड़ से अलग दिये परन्तु अन्त में बचने का कोई उपाय न देख कर ने अपनी तलवारों से अपना सिर काट कर स्वर्ग लोक चली गईं। सरदार देवरा ने भी पवित्र स्वदेश भूमि की करना स्वीकार किया। उसने भी अपने लड़के को भेज था उनके अतिरिक्त और भी बहुत से राजपूत और आगये थे जो बड़े वीर और चतुर थे। सब इसी बात अटल जमे हुये थे कि मुसलमानों के हाथ से क़िले को करें। जान जाये तो भले ही जाये परन्तु क़िला हाथ से जाये। इन बहादुरों ने किया भी ऐसा ही। बड़े ज़ोरों की लड़ाई हुई। एक एक करके सब मारे गये। केवल एक बहादुर सरदार बचा जिसने पीछे अपना पराक्रम दिखलाया।

अकबर अपने हथियार आप ही साफ़ कर रहा था और सोच रहा था कि क्या उपाय करूँ जिससे क़िले को शीघ्र छीन लूँ। उसकी सेना में बड़े बड़े चतुर कारीगर, लोहार, बढ़ई और राज मौजूद थे। वे क़िले के ऊपर से गोले बरसाते हुये शहर में चले जा रहे थे और बड़ी वीरता से अपना काम कर रहे थे। मरने मारने के लिये तैयार थे। ऐसे अनेक उपाय किये जा रहे थे कि जिन से क़िले पर अधिकार हो जाय! सैकड़ों बहादुर प्रतिदिन मरते थे। शेष मनुष्य उनकी

(तल)वार के नीचे सिर झुका देते थे। विधवा माताएँ और घरा स्त्रियाँ पुरुषों का भेष धारण किये और हाथ में भाला लिये हुए सैनिकों के साथ में रहती थीं। स्त्री, पुरुष, युवा, वृद्ध सब कट कट कर मरते थे। प्रायः उन्हीं की स्त्रियों में इतना जोश और उत्साह था कि [illegible] और [illegible] धारण करके युद्ध में कहाँ पुरुष कब पीछे हट सकते थे! इस युद्ध की घटनायें [illegible] पूतों की कीर्ति में अपूर्व ही महत्व रखती हैं।

एक रात को दीवार [illegible] किले की दीवार को [illegible] पर नीचे को [illegible] हुए [illegible] [illegible] था। [illegible] ही [illegible] रही थी। अकबर की [illegible] पर [illegible] गई और [illegible] उसी [illegible] किया। [illegible] बन्दूक [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] गया।

वीर जयमल

[illegible]

[illegible]

यह सच हुआ, किन्तु जयमल और पत्ता की अनुपम वीरता से अकबर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन दोनों वीरों की मूर्तियाँ हाथी पर बनवा कर दिल्ली के क़िले में लगवाई थीं जिन्हें पीछे औरङ्गज़ेब ने तुड़वा दिया था।

वीर पत्ता

मेवाड़ में आज भी जगह जगह उन दोनों वीरों की वीरता के गीत वहाँ की स्त्रियाँ गाती हैं। सवेरे उठकर मेवाड़ के वीर पुरुष उन दोनों वीरों का नाम स्मरण करते हैं। जब तक मेवाड़ और चित्तौड़ का नाम रहेगा तब तक उन दोनों वीरों का नाम इस संसार में अमर है।

हल्दी घाटी की लड़ाई

शत्रु केवल चित्तौड़ ही में नहीं थे, किन्तु अन्य स्थानों प[र भी]
वे अपना अधिकार जमा रहे थे। रणथम्भौर का क़ि[ला]

इनकी काली काली आँखों और पीले चेहरे को पहले से देख
रा था। उनके नाक की दाईं ओर एक मस्सा था, उसे भी
ों ने देख लिया। यह अकबर के सौभाग्य का लक्षण
भा जाता था। सब ने आसानी से पहिचान लिया कि
भेद बदले हुये कौन हैं। उसको देखकर सब भयमान हो
। राजपूत अतिथि पर कभी अन्याय नहीं करते, परन्तु प्रश्न
था कि इस भयङ्कर शत्रु के साथ क्या व्यवहार किया
ए। यह निर्भीक सिंह की गुफा में चला आया है और यहाँ
तैयारियाँ अपनी आँखों से देख चुका है। राजा मानसिंह
क्या कहा जाय जिसने अपनी जाति को धोखा दिया।
पूत इसी सोच विचार में थे, परन्तु अकबर उसी तरह
हर बैठा रहा।

राजा मानसिंह ने सुर्जनसिंह से कहा राणा का साथ
ो दो, रंथम्भोर का क़िला दे दो। कहते हैं कि इस प्रकार
भौर का क़िला अकबर के हाथ आगया परन्तु यह बात
झ में नहीं आती कि राजपूत जैसे वीर योद्धा किस
र दासत्व के बन्धन में फंस गये। सच तो यह है कि
पूताने में फूट की ज्वाला भड़क उठी थी। प्रत्येक राज्य
र्थ की चिन्ता में लगा हुआ था। जातीय जीवन और
गीय उत्साह उनके मन से निकल चुका था। वे दिन जाते
थे कि जब राणा साँगा ने सबको अपने झंडे के नीचे
त्रित किया था। उदयसिंह इस योग्य नहीं समझा जाता

ा था कि यह मेवाड़ की जागीर समझा जावे। मैंने
गड़ों में कोई भाग नहीं लिया और न मैं इनसे कुछ
हाना चाहता हूँ। माना कि मैं निर्बल हूँ, मेरे पास
सिपाही नहीं हैं कि मैं बादशाह से लड़कर उसे बचा लूँ,
मैं राजपूतों के नाम पर धब्बा न आने दूँगा। मैं उनकी
र लिख जाऊँगा कि राजपूतों के जीते जी रणथम्भौर
मी का अधिकार न होने पावे यह कह कर उसने
बाना धारण कर लिया और अपने सिपाहियों
कर पान खाकर क़िले के फाटक पर आया और असंख्य
ों का रक्त और रक्त में मिला कर आप भी उसी
गया।

इस समय उदयसिंह निन्दनीय जीवन व्यतीत कर रहा
किसी की भी दृष्टि में उसके प्रति भक्ति और श्रद्धा
थी। युद्ध के समय जङ्गलों और पहाड़ों में जा छिपा।
बर पर चला गया तब निकल कर बाहर आया और
झील के किनारे अपने नाम से नगर बसाया जो अब
उदयपुर कहलाता है। यद्यपि मेवाड़ के राणा लोगों में
सबसे निकम्मा और मूर्ख हुआ है तथापि मेवाड़ देश अब
उनके नाम से प्रसिद्ध है। उदयसिंह के जीने का
के अतिरिक्त और कोई विशेष कारण नहीं था कि उनके
बाद पुत्र थे। मरने प्यारा पुत्र जगमल था, जिसको
अपना युवराज बनाना चाहता था। नियमानुसार यह

जल्लाद उसको मारने के लिये ले जा रहे थे। मार्ग में ठाकुर चन्दावत ने उसे देख लिया और जब उसको मारा जाना मालूम हुआ तो उसने कहा कि बालक को मुझे दे दो, बदले में जो माँगे दूँगा। जल्लाद उसके पास बालक को छोड़ गए। उसने राणा के पास जाकर निडर होकर कहा कि मैं पुत्र-हीन हूँ, इसलिए मुझे दे दिया जाय। मेरे बाद यह चन्दावत कहलावेगा। उदयसिंह मेवाड़ के [illegible] अधिक [illegible] [illegible] की प्रार्थना का अस्वीकार न कर सका। चन्दावत ठाकुर नरसिंह का बच्चा गोद में उठा कर ले गया और [illegible] में ले जाकर इसने उसके [illegible] का [illegible] [illegible] कर दिया।

चित्तौड़ की लड़ाई के बाद [illegible] उदयसिंह का देहान्त हुआ परन्तु उसके विद्रोह का देश में अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। बसन्त ऋतु थी, शिकार का समय आ गया था। इस ऋतु में राजपूत हिरन का शिकार खेलते हैं, परन्तु [illegible] हो चुका था। सरदार उसके समूह के चारों ओर [illegible] हुए थे, उसने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] विचार नहीं किया।

[illegible] अनुसार उदयसिंह की [illegible] [illegible] के [illegible] पहुँचा [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] जाकर [illegible] करता है [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

बार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
ों ने जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
सरदारों और सभासदों का सम्बोधन करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, चारों ओर की ज़मीन हरी भरी हो आई और देश के
स पर वाराह बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
बीत जाय और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुये थे।

आनन्द से सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
खेट के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
त्साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बड़े
जोर और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
ो! मेवाड़ के वीरो!! स्मरण रक्खो कि आज वाराह के
शिकार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। मत
समझो कि केवल शांति के समय में षोडशोपचार सहित घनघोर
पूजा अर्चन करके ही भगवती के सामने वाराह की बलि देने
कार्य सिद्ध हो जायगा। माता के सामने वन सुअरों की
स देते हो तो भले ही दो, लेकिन अच्छी तरह से याद रक्खो
कि हमारा महाव्रत जो चित्तौड़ को स्वाधीन करने का है वह
वन वनवाराहों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

बार बाँधा और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
र से जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
रदारों और सामन्तों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, घाटी की भूमि में कलशा दी जाये और देश के
र पर शिकार खेला जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
बीते और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुए थे।

आनन्द से सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
कार के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बड़े
प्यार और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के प्यारे !! स्मरण रखना कि आज शिकार के
कार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। सब
जानते कि केवल शान्ति के समय में थोड़ी सी संख्या सहित अकबर
का सामना करके ही अकबर के सामने शिकार की बलि देने
का कार्य सिद्ध हो सकता। शत्रु के सामने हम सूअरों की
बलि देते हैं जो अभी ही हैं, लेकिन अकबर आज से बाद हमको
। संग्राम स्थान को चित्तौड़ को स्वतंत्र करने का है यह
काम हम सरदारों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

बार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
ने जयध्वनि की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
दरबारियों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न्त ऋतु है, घाटों की झीलें कमला हो जायँ और देवी के
र पर वाराह बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
तीत हो और किसी प्रकार की आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। राणा और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे दुपट्टे बँधे हुए थे।

आनन्द में भरे सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
खेट के फल पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बड़े
भार और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के वीरो!! स्मरण रखना कि आज वाराह के
कार पर ही मेवाड़ के भाग्य की परीक्षा निर्भर है। मन
मझा कि देवम शांति के समय में षोडशोपचार सहित घनघोर
ध्वनि करके ही भगवती के सामने वाराह की बलि देने
कार्य सिद्ध हो जायगा। माता के सामने पशु कुबलों को
म देने हो तो अभी ही थी, लेकिन अच्छी तरह से याद रखनो
हमारा सनातन जो चित्तौड़ को स्वाधीन करने का है यह
वल सत-वाराहों के बलिदान करने से ही नहीं हो सकता है।

चार बाँधी और तीन बार झुककर प्रणाम किया और
र ने प्रदक्षिणा की।

ज्योंही राज्याभिषेक का कार्य समाप्त हुआ त्योंही प्रताप
सरदारों और मंत्रियों को सम्बोधित करके कहा कि यह
न अवसर है, घावों को भूमि में दफना दी जावें और देश के
स पर धावा बलि किया जाय जिससे यह वर्ष आनन्द से
बीत हो और किसी प्रकार का आपत्ति या विपत्ति का
मना न हो। बाद और उनके साथी घोड़ों पर सवार
। उनके सिरों पर हरे झुण्डे बँधे हुये थे।

आनन्द से सबै सब शिकार खेलने लगे। सभी उपस्थित जन
सिंह के पास पर मेवाड़ के भविष्य शुभाशुभ का विचार
ने लगे। महाराणा भी अपने सरदारों को इस अवसर पर
साहित और उत्तेजित करने लगे। अपने सरदारों को बहु
कर और उत्साह पूर्ण शब्दों में कहने लगे—सरदार
! मेवाड़ के प्यारे!! स्मरण रक्खो कि आज तुम्हारे
धार पर ही मेवाड़ के भाग्य की रक्षा निर्भर है। [illegible]
[illegible] कि [illegible] मेवाड़ में [illegible]
[illegible] करके [illegible] के सामने [illegible]
[illegible] हिन्दू [illegible] के सामने [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रदान किया और
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] थीं।
[illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] करके कहा कि [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] किया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] का और [illegible] [illegible] का [illegible] का [illegible] का
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] हुए हैं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible]
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] की [illegible]
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]—[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] के
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] है। [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] की [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] की [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] की
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

उदयसिंह की मृत्यु के समय जो लोग ... इधर उधर खड़े थे उनमें उसका साला शोनिगुर भी था जिसकी बहिन प्रताप की माँ था। अब उसने वचन सुने तो उसके नेत्रों में रक्त उतर आया। सरदार ने कहा कि कोई चिंता मत करो, मैं शां... सामने प्रताप का सहायक हूँ, परन्तु राज्याभिषेक तो जगमल के ही लिये होती रही समस्त सरदार ... के राज्याभिषेक के देखने के इच्छुक थे। प्रताप ने ... जगमल के शासन में मेरा जीवन नष्ट हो जायगा। उसने अपने मित्रों के साथ मेवाड़ छोड़ने की तैयारी ... यह समय निकट था कि सूर्यमुखी झण्डे के नीचे ... राज्य सिंहासन पर आरूढ़ हो और सरदार ... उसकी कमर से तलवार बांधे। एक ओर चन्दावत और दूसरी ओर तुवर जाति का सरदार था। यह वह वीर था जो चित्तौड़ की लड़ाई में बचा था।

चन्दावत ने जगमल का हाथ पकड़ कर कहा—"आ... आपको भ्रम हुआ है। यह अधिकार आपका नहीं ... के भाई प्रताप का है।" इससे पहले कि जगमल इस ... में अपना क्रोध प्रकट करता, उसने उसको वहाँ पकड़ ... साथ बिठा दिया और राणा प्रताप को बुला भेजा। ... स्थान पर चन्दावत ने स्वयं और शांति के साथ

..., परन्तु उसने किसी पर प्रगट नहीं किया। उसके ...त मुग़ल हो गये थे; किन्तु दूसरे राजपूतों ने ... र अलग बाँध रक्खा था। आमेर, बीकानेर और ... के राजा दिल्ली के मुग़ल हो चुके थे, और उनमें ... [illegible] कम हो गया था कि बूँदी के ... [illegible] मुसलमानों के साथ ... [illegible] और ... [illegible]

[illegible]

र था, परन्तु उसने किसी पर प्रकट नहीं किया। उसके केवल मुग़ल ही नहीं थे; किन्तु दूसरे राजपूतों ने भी र पर कमर बांध रक्खी थी। आमेर, बीकानेर और ाड़ के राजा दिल्ली के गुलाम हो चुके थे, और उनके ीय जीवन का जोश इतना कम हो गया था कि बूंदी के ाय सब ने अपनी अपनी पुत्रियों का मुसलमानों के साथ ाह कर दिया था और प्रताप का भाई सुगरसिंह अकबर जाकर मिल गया था। अकबर ने उसे गांव, भूमि और ीर दे दी थी और उसकी तथा उसकी सन्तान की ार में बड़ी प्रतिष्ठा थी। अन्त में मेवाड़ युद्ध के कारण और जन दोनों से खाली हो गया था। केवल प्रताप ही साहस था कि जिसने इन आपत्तियों पर भी आताय वन के हस्माह को दृढ़ रक्खा। यदि और कोई मनुष्य होता बादशाह के शासन में रहकर सांसारिक लाभ और भोग लाभ की इच्छा करता।

प्रताप मेवाड़ को स्थिर रखना चाहता था। चाहे शत्रु विजय प्राप्त न हो, परन्तु राजपूत लूटमार मचाते रहें र दिल्ली वालों के नाक में दम करते रहें। उसने क़सम खा । था कि जब तक मुसलमानों को मेवाड़ से भगा न दूंगा ब तक मैं कभी चैन न लूंगा। उस समय से एक [डंका] ाजा जो सदा राणा की सेना के आगे रहता था पाछे रहने गा। राणा ने इस बात का प्रण कर लिया था कि जब तक

गई। प्रताप तैयार होगया, परन्तु राजपूती धर्म
अनुसार बहुत देर तक दोनों इस बात पर रुके रहे कि
कौन वार करे। अन्त में यह निश्चय हुआ कि दोनों
साथ वार करें। वे तैयार ही थे कि इतने में राजपुरोहित
आ पहुंचा और उसने युद्ध के रोकने की प्रार्थना
दोनों की आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं। अब पीछे
का सन्धि करने का समय नहीं रहा था। आगे
में लेकर एक दूसरे पर झपटे। पुरोहित नहीं चाहता
कि दोनों भाइयों में युद्ध हो। उसने बीच में खड़े
ह अपनी छाती में छुरा भोंक लिया और उसी स्थान
राजकुमारों पर अपनी बलि दे दी। यह बलिदान ऐसा
था कि इसका प्रभाव राजकुमारों के हृदय पर न पड़ता।
देख कर भाइयों के हृदय कांपने लगे। दोनों ने अपने अपने
। थाम लिये और भूमि पर कूद पड़े तथा उसके प्राण
। के लिये उद्योग करने लगे, परन्तु उसके प्राण पखेरु उड़
: थे. बालको विचार कर सकते हो कि उनको [illegible] रहा था
[illegible] तुरन्त दोनों पर अपने प्राण
न्यौछावर कर दिये।

इस प्रकार अंत हुआ तो उसने शक्तिसिंह से कहा कि
अपने [illegible] के लिये चले जाओ; शक्तिसिंह ने देश
छोड़ दिया। वह एक सवार होकर दिल्ली की ओर चल
दिया। उसी दिन से प्रताप ने एक भाई को खो दिया और

हर की तरह उतर आता था और उनको लूट लेता था, ह इत्यादि के लिये बादशाह के पास आते थे।

एक दिन की बात है कि एक बेचारा गड़रिया अपनी चरा रहा था। उसने सोचा कि यहाँ आकर कौन ा; परन्तु राणा वहाँ पहुँच गया और उस से प्रश्नोत्तर के बाद उसको मार डाला और उसकी लाश का एक पर लटका दिया गया जिससे औरों को भय हो और राणा की अवज्ञा करने का साहस न हो।

अकबर इन सब बातों को बड़े ध्यान से देखता था। सदा राणा के साथ शत्रुता नहीं रखना चाहता था। विभाग का मंत्री टोडरमल राजपूत था। भगवानदास मानसिंह आदि कई राजपूत सरदार अकबर के यहाँ थे। अकबर को हिन्दुओं से कुछ द्वेष नहीं था। उस निवास में कई हिन्दू रानियाँ थीं, उनको अपनी अपनी के अनुसार पूजा करने की आज्ञा थी अकबर गोरक्षा ओर विशेष ध्यान देता था। इन सब बातों के होने भी किस कारण से अकबर ने प्रताप के विरुद्ध युद्ध किया यह एक विचारणीय प्रश्न है। राजपूत इसको वर्णन करते हैं कि आमेर का राजा मानसिंह अकबर ओर से काबुल को जीत कर आ रहा था। जब वह वाड़ से होकर गया तो उसने महाराणा प्रतापसिंह को हला भेजा कि यदि आज्ञा हो तो मैं मिलने चला आऊँ

। हाथ का हुक्का पानी तक भी पीता हूँ ? त्याग दिया हूँ।

यह शब्द सुनकर मार्तण्डसिंह को क्रोध आ गया। उसने त्याग दिया और उसने साथियों को लेकर यहाँ से कूच हुआ और कहने लगा कि तुम्हारे हाथ से लिया कायरों के जो देवताओं पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ था। मैंने तुम्हारे जीवन की रक्षा करने के लिये अपना नष्ट कर दिया और अपनी शक्ति और पुरुषों को मौत के मुँह में दिया। यदि तुम आपत्ति में रहना चाहते हो तो तुम्हारी इच्छा। अब देखूँ तुम्हारी रक्षा कौन करता है।

मार्तण्डसिंह का संकेत पाते ही अपने साथियों ने घोड़ों पर चढ़ कर लों और उनके चलने को तैयार होगये तो समझ गया मार्तण्डसिंह आये। उनका शरीर छिद गये थे घाव लगे हुए थे; परन्तु फिर भी उनके चेहरे से ऐसा स्पष्ट होता था कि मानो हिन्दुओं का सूर्य अस्त होने वाला है। उनके देखते ही मार्तण्ड के पास पहुँच कर पालकार न रहा। यह कहने लगा कि यदि आप आते हैं तो मैं तुम्हारे साथ जो सर्वस्व करके रहूँगा। पुत्र न होने से उसने दिया कि अब जो चाहे करो, तुम हर समय तैयार रहना। मनुष्य में सर्व प्रकार मनुष्य होते हैं। राजा के साथियों में से किसी एक ने

का उचित नहीं था। जो कोई ऐसा करता था वह कायर और नमकहराम समझा जाता था। और राजपूतों के पास कोई [illegible] परन्तु नहीं थी जिस पर उनको भरोसा हो। उन्हें केवल [illegible] बाहुबल पर भरोसा था। इस युद्ध में भाई के विरुद्ध [illegible] और सम्बन्धी के विरुद्ध सम्बन्धी खड़े किये गये थे। [illegible]सिंह भी मुसल्मानी सेना में सम्मिलित था। महाबतखाँ, [illegible]र का भतीजा और उनके सगे भाई सुन्दरसिंह [illegible] सब मरने मारने के लिये आये हुए थे। सलीम स्वयं [illegible]पूती माता के उदर से था। उसकी बगल में आमेर राजा मानसिंह था। प्रताप ने कहा, चाहे युद्ध भी [illegible] न हो, परन्तु मैं मानसिंह को उसकी नमक हरामी का [illegible] चखा दूँगा।

महाराणा प्रतापसिंह की ओर केवल २२ हज़ार राजपूत परन्तु वे सब अग्रसर और बाँके राजपूत थे। तलवार उनकी और तलवार को उनसे शोभा थी। उनमें से [illegible] से बड़ा के बच्चे तक भी थे। परन्तु शत्रु की सेना के [illegible]ने के लिये [illegible] में थे। हाथी और [illegible] की लड़ाई [illegible] लाख सेना इधर और थी और २२ हज़ार इधर [illegible] मैदान [illegible] से निकलने थे। इस प्रकार का युद्ध किसी युग [illegible] अनुमान नहीं था। वे हज़ार राजपूतों के हाथों में दूसरे [illegible] से शत्रुओं पर [illegible] थे वा इधर से

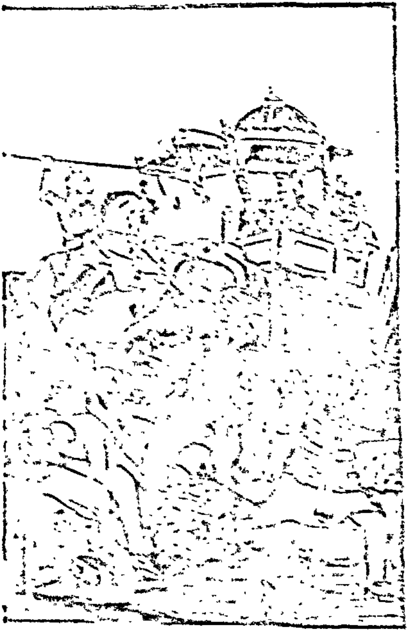

याराय्यल की सन्तान में से कदाचित किसी ने इस शत्रु के दांत खट्टे किये होंगे। वह निर्भयता से लड़ता। मरते मरते उसने हाथ से, पांव से और तलवार से शत्रुओं का रक्त और राख म मिलाया। अन्त में शत्रुओं ने इस प्रकार वध किया जिस प्रकार वध किये हुये सिंह चींटियों की पंक्ति पकड़ लेती है। उसके १५० साथी भी साथ लड़ते हुये बैकुंठवासी हुये। उन्होंने मरते दम अपने मालिक का साथ दिया। और ना जितने ही पूत योद्धाओं ने मातृभूमि के गौरव की रक्षा के लिये हंसते प्राण न्योछावर किये। २२ हज़ार राजपूतों में केवल ८ हज़ार राजपूत बचे। १४ हज़ार स्वदेश के लिये मर अपनी कीर्ति अमर कर गये। रणभूमि से आगे निकलकर र अकेला घोड़ा दौड़ता हुआ चला जा रहा था, जिससे सी जगह पहुँच कर आराम करे। राजपूत लड़ते हुये आ थे, जिससे शत्रुओं को राणा का पता न लगे। यह सच्चाई र स्वामि-भक्ति कहाँ देखने में आई है? प्रताप मन ही मन पछताता था कि हाय! मैं क्यों न आज मेवाड़ के काम गया। इससे अच्छा मरने का दिन अब कौन सा आवेगा। र उसने सोचा कि नहीं, समरसिंह बिना काम का नहीं। ह दिनों जीवित रहना आवश्यक है जिससे मेवाड़ को नि न पहुँचे। चेतक हवा से बातें करता हुआ जा रहा था, रास्ते में घोड़े की टापों की आवाज़ कान में पड़ी। राणा

[illegible] प्यासा खड़ा होगया, परन्तु किस लिये ? यथा [illegible] के निपटारे का दिन था जिसको रोकने के [illegible] न [illegible] आज हो था ? ज्योंही प्रताप [illegible] दान का [illegible] [illegible] की जान [illegible] से [illegible] में आगई और उसका [illegible] शरीर [illegible] गिर पड़ा। [illegible] ! धन्य है, तेरा [illegible]।

[illegible] साथ [illegible] मुझको पीछे देखने [illegible] नहीं है। मुरादाबाद और मुल्तान के दोनों [illegible] पूरे हुये हैं। अब इनसे मुझको कोई भय [illegible]।

[illegible] निकले [illegible] [illegible] दोनों [illegible] एक दूसरे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] है। [illegible] मुरादाबाद और मुल्तान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible]

जहाँ बादशाह होता है, वहीं उसका दरबार होता है,
हो या मैदान, जङ्गल हो या टीला, महल हो या श्मशान,
यह होता वहीं राज गद्दी समझी जाती। उनके साथी
स्वामिभक्त थे। वे शान्ति के समय में भी उनका
देते थे। उनका भोजन फल फूल या घास की रोटियाँ
थीं, लेकिन राणा जो वस्तु हाथ से उठा कर सरदारों
देता था, उसे वे बड़ी श्रद्धा से ले लेते थे। इस बुरे
में भी राणा का बड़ा सम्मान किया जाता था। इस
उत्साह और वीरता का दृष्टान्त और कहाँ मिलता
भूखे प्यासे राजपूतों के लिये न कोई डेरा था और न
सहारा। उनकी जान सदा जोखम में रहती थी। थोड़ी
सेवा करने पर उनको माल धन मिल सकता था;
से अच्छे नर्म बिस्तरे के पलंग मिल सकते थे, फौज
सरदारी मिल सकती थी। विवाह करके वे सम्मान
कर सकते थे जो आज तक उनके नाम को लिए
था। अकबर उनके मुँह की ओर देखा करता था। केवल
मुँह [illegible] ने की देर थी; परन्तु क्या कभी किसी ने
[illegible] पि नहीं। एक शब्द भी उनकी जिह्वा पर
[illegible] जब तक राणा ने अपने स्वाभिमान का
[illegible] तक वह अपनी आन का पक्का रहा; जब
आत्मगौरव की रक्षा की तब तक
नके ऊपर मोहित रहे और अपने

जहाँ बादशाह होता है, वहीं उसका दरबार होता है, ह वो या मैदान, जङ्गल हो या टीला, महल हो या श्मशान, यह होता वहीं राज गद्दी समझी जाती। उसके साथी त्रे स्वामिभक्ति थे। वे आपत्ति के समय में भी उसका । देते थे। उनका भोजन फल फूल या घास की रोटियाँ । थीं, लेकिन राणा जो वस्तु हाथ से उठा कर सरदारों दे देता था, उसे वे बड़ी श्रद्धा से ले लेते थे। इस बुरे य में भी राणा का बड़ा सम्मान किया जाता था। इस लिये उत्साह और वीरता का दृष्टान्त और कहाँ मिलना भूखे प्यासे राजपूतों के लिये न कोई डेरा था और न सहारा। उनकी जान सदा जोखम में रहती थी। थोड़ी नम्रता करने पर उनको माल धन मिल सकता था। ढ़े से अच्छे नर्म बिस्तरे के पलंग मिल सकते थे, फौज सरदारी मिल सकती थी। विवाह करके वे सम्मान प्त कर सकते थे जो आज तक उनके नाम को लिए ती। अकबर उनके मुँह की ओर देखा करता था। केवल के मुँह खोलने की देर थी; परन्तु क्या कभी किसी ने ऐसा किया? कदापि नहीं। एक शब्द भी उनकी जिह्वा पर भी नहीं आया। जब तक राणा ने अपने स्वाभिमान का चार रहा तब तक वह अपनी बात का पक्का रहा; जब क उसने अपने आत्म-गौरव की रक्षा की तब तक जपूत भी उसके ऊपर मोहित रहे और अपने

के लिये उसने शहर में एक विशेष मोहल्ला बसाया
और उनके साथ वह प्रेम और आदर का व्यवहार करता
जिसके कारण उन्हें उसकी आधीनता बुरी नहीं
थी। परन्तु कट्टर और पक्षपाती मुसलमान उसके
प्रकार के व्यवहार से बड़े रुष्ट थे। बीकानेर के राजा
पुत्र रायसिंह और पृथ्वीराज मुग़ल दरबार में
थे। उनको बड़ी बड़ी पदवियाँ दी गईं। रायसिंह की
सलीम का ब्याह कर दिया गया। पृथ्वीराज वीर
होने के अतिरिक्त कवि भी था। जो राजपूत अकबर
के अधीन हुए थे, उनमें वह सबसे अच्छा समझा जाता
उसका सम्बन्ध प्रताप की भतीजी अर्थात् शक्ति की
से हो रहा था। उस पुत्री में राणाओं का रक्त था,
कारण वह वीरता, धीरता, लज्जा और सुन्दरता में
य थी।

अकबर ने अपने दिल बहलाने के लिये मीना बाज़ार
रक्खा था, जो प्रतिमास महल के सामने में लगा
था उसमें बेगमों, महारानियों, राजकुमारियों तथा
रदारों की बहू बेटियों तक को वहाँ आना पड़ता था।
ना बनाई हुई वस्तुएँ वहाँ बेचा करती थीं। अकेला
आ हुआ खुद लिया करता था, व्यापारियों की स्त्रियों
दे देता था। वस्तुएँ वहाँ से आगे भी जाती थी। इस
में केवल स्त्रियाँ सौदा खरीद सकती थीं, परन्तु

से झटक कर गिर पड़ी। इस पर अमरसिंह ने उस के घर को बुरी दृष्टि से देखा। तभी राणा ने अपने मन समझ लिया कि मेरे लड़के में श्रम और स्वभाव की रता नहीं है।

प्रताप बिना किसी प्रकार के भय और संकोच के युद्ध कठिनाइयों को सहन करता रहा, परन्तु अब उसकी नष्ट हो चुकी थी और सहन करने की शक्ति उसमें बहुत नहीं रही थी। सरदार उसकी अन्तिम आज्ञा सुनने बुलाये गये। मृत्यु शय्या पर लेटे हुये राणा के मुख से का शब्द सुनकर सरदार चन्द्रावत ने फिर प्रश्न किया आपको किस बात का कष्ट है जिसके कारण आपकी प्राण दुःखी हो रही है। प्रताप ने आँखें खोल दीं और कहा मैं शायद शान्ति न मरूं। मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग प्रतिज्ञा करें कि मेवाड़ के साथ आप प्रेम करेंगे और हमारा तुर्कों के हाथ में न जायगा। इससे मुझको शांति होगी। सके पश्चात् फिर कहा कि अमरसिंह से मुझे आशा नहीं कि यह देश और धर्म की रक्षा कर सकेगा। यह इन झोंपड़े में रहना पसन्द न करेगा, इनके स्थान में ये झोंपड़े गिरवा दिये जायेंगे और इनके स्थान में महल तैयार कराये जायेंगे। [illegible] [illegible] [illegible]

शक्तसिंह के सोलह पुत्र

…ला प्रताप का कहना सत्य निकला। उसका पुत्र और …ड़ के सरदार अपनी प्रतिज्ञा को भूल गये। अमरसिंह …अपनी साहस और वीरता अवश्य थी। परन्तु उसने …सम्पूर्ण आयु लड़ाई-भिड़ाई, दुःख और कष्ट में व्यतीत …की थी। शत्रुओं से लड़ते लड़ते उकता गया था। वह अभी …न था। जवान आदमी में स्वभावतः आराम की इच्छा …है पर प्रताप ने कभी उसको ऐसा अवसर नहीं दिया …ब प्रताप की मना करने वाली आवाज़ संसार से उठ …गई थी। अब मुग़लों की देख भाल करने वाला कोई नहीं …। अमरसिंह भोग विलासी होगया था और अपने …अवस्था के कष्टों के स्थान में नाना प्रकार के भोग विलासों …लीन होगया था। कुछ वर्षों तक वह निडर होकर …पुर के संगमरमर वाले महल में जो झील के किनारे …है जो स्वयं उसने अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये …वाया था नर्म पलंग पर लेटा हुआ नाचने वालों का नाच …ता रहा, अपनी सब इच्छाओं की तृप्ति करता रहा। …यह महल शीशों से मढ़ा हुआ था और वह उसको …देखकर बहुत प्रसन्न होता था।

अकबर घबड़ा कर मरणोन्मुख था। अब उनकी दृष्टि

[illegible] से पास रहा था।
किया। पहले उनकी लड़ाई [illegible]
[illegible] जाता था कि [illegible]
[illegible] से शुरू करने में उनका [illegible] था।
[illegible]

भ्रातृभाव को त्याग कर दिल्ली का दासत्व स्वीकार
[illegible]या था।

[illegible]सार की नाशमान् वस्तुओं पर धर्म का अर्पण करने
थोड़ी देर के लिये विचारें। जो लोग नाश होने वाले
विलासों के कारण अपने देश और जाति की परवा
[illegible]रते वे इस घटना पर विचार करें। सुगर चित्तौड़ में
जहाँ चारों ओर उदासी ही उदासी छाई हुई थी।
[illegible] के खण्डहरों में उल्लू और चमगीदड़ रहते थे। यह
[illegible]नान था जहाँ राजस्थान के योग्य राजपूतों ने एक
[illegible]न भूमि को अपने रक्त से रङ्ग दिया था। उसमें
[illegible]यल का रक्त भी विद्यमान था। चित्तौड़ के विनाश के
[illegible]ने कल्पित वेष धारण कर उसके हृदय पर आक्रमण
प्रारम्भ कर दिया, 'अरे राजपूत ! तू मुसलमानों की
[illegible]ना से चित्तौड़ पर शासन करने आया है। क्या तू नहीं
[illegible] कि जातीय अभिमान और देश हित में स्त्री पुरुष,
बालक सब ने अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे?
आत्माएँ अब भी बदला लेने के लिये चिल्ला रही हैं।
[illegible]उन्माद के कारण स्त्रियों ने, पुरुषों ने, यहाँ तक कि
बच्चों ने भी प्राण दे दिये थे, आज तू उनको अपना
[illegible]क बना रहा है। अरे नीच ! तू इतना निर्लज्ज होगया
[illegible]उनकी सहायता से चित्तौड़ पर शासन करने आया
[illegible]तो सही किस भाँति तेरा पैर यहाँ जमता है।' पूरे

र पुत्र उत्पन्न हुए। मरते समय १७ पुत्र उसके पलंग के ओर खड़े थे। जब वह मर गया तो बड़े पुत्र ने कहा भाई क्रिया कर्म के लिये अर्थी के साथ जावें और मैं किले की रक्षा करूँगा। १६ भाइयों ने उसका कहना गया, परन्तु जब वे क्रिया कर्म करके किले के द्वार पर तो उसे बन्द पाया। बड़े भाई ने खिड़की से शिर निकाल हा कि मैं स्वयं इतने मनुष्यों की रक्षा का भार नहीं ले , उचित है कि तुम और स्थान पर जाकर अपना अपना कर लो। १६ भाईयों ने चूँ तक नहीं की, उन्होंने कहा— "अच्छा हमारे हथियार और घोड़े हमको दे दो, फिर तुमको कोई कष्ट न देंगे।" हथियार और घोड़े उनको गये और वे सब के सब अपने बाल-बच्चों को साथ आजीविका की चिंता में चल पड़े। अचलसिंह उनका र बना और बल्लूसिंह जो सब से अधिक बलवान था, दाहिना हाथ बनाया गया।

ईडर की ओर चल पड़े जो मेवाड से दक्षिण की है और जिस पर मारवाड़ के राठौरों का उस समय कार था, परन्तु अभीष्ट स्थान पर पहुँचने से पहले अचल बीमार हो गई और आगे जाना असंभव हो गया। सिंह ने अनेक उपाय किये कि उसके लिये कोई विश्राम न मिल जाय, परन्तु सब व्यर्थ हुआ। एक सरदार से बात गई कि थोड़ी देर के लिये उस बेचारे को सहारा

पानी की धार में उनका शामियाना बहने लगा, [illegible] घर से बाहर आई और [illegible] हुई घर में ले गई। उसे अपने [illegible] को अपने घर में ले गई। उसने यह उचित [illegible] भाँति [illegible] था। उसने [illegible] और पानी के समय [illegible] कि एक [illegible] आँधी और पानी [illegible]

[illegible] हुआ उसने [illegible] व्यवहार से [illegible] कि आप लोग [illegible] बड़ा [illegible] और [illegible] आई है [illegible] कि [illegible] उत्तर दिया कि [illegible] इन्होंने [illegible] से [illegible] हमारी सेवा की [illegible] हम कभी नहीं [illegible] न [illegible] इनको [illegible] न [illegible], [illegible] कि [illegible] बहुत दिन [illegible]

[illegible]

[illegible] गुलाम [illegible] हूँ [illegible] कि फिर [illegible]
[illegible] लिये।

[illegible]

[illegible] गई। [illegible]

[illegible]

रामसिंह के पुत्रों ने अपने वंश के विजय की गाथा गाई। चन्द्रावत के साथ एक बड़ा बहादुर देवगढ़ का सरदार था। शिकार में या लड़ाई में कभी उसका हाथ खाली न जाता था। वह ऐसा बहादुर था कि क्षण भर में लाशों के ढेर लगा देता था। जब उसने सरदार को गिरते हुए देखा तब उसकी लाश की ओर झुका और उसने लाश को दुशाले में बाँध कर कंधे पर रख लिया और घोड़ा पर चढ़ा। ऊपर से गोलियाँ बरस रही थीं, परन्तु उसने कुछ परवाह न की। उसने दीवार पर चढ़कर लाश को किले में फेंका और जोर से चिल्लाकर कहा—'राणा के फौज का हुक्म था। चंदावतों को सबसे पहले किले में [illegible] है।' चन्द्रावत किसी तरह न था। अपने सरदार को [illegible] देखते ही वे भी दीवार पर चढ़ गए। फिर दोनों [illegible] में। ठीक इसी समय फाटक टूट कर सेना ने अन्दर प्रवेश किया। यह रामसिंह के पुत्रों की [illegible]

[illegible]

...था इस बूढ़े के सामने सिर झुकाना पड़ा, ...लड़ाई में इसे हरा दिया था। शाहजहाँ ने आगर ...रोध प्रार्थना की कि आप क़िले के बाहर आकर ...को स्वीकार कर लीजिये और केवल इतना ही ...ने पर मेवाड़ से मुसलमानों की सेना हटा दी ...सु राणा ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि ...राम निवास से निकले आता हूँ स्वयं [illegible] ...हीं कर सकता।

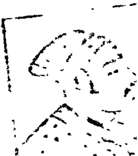

...[illegible] से कुछ दिन पीछे ...र का कुछ बर्ष सिर [illegible] ...ह को सलाम करने ...। शाहजहाँ के कहने पर ...[illegible] और ...[illegible] दिया गया।

[illegible]

पाये। इसी लिये मैंने अपने पुत्रों को लिखा कि राणा से कहो—"मैंने उसको क्षमा कर दिया और मैंने मित्रता का भेजकर अपनी कृपा का उसे विश्वास दिलाया।"

राणा मुगलता से आधीन होगया। यद्यपि जहाँगीर निर्दयी प्रसिद्ध था और शराब के नशे में चूर रहता था फिर भी वह बहुत अच्छा था। उसको इस बात का ध्यान था कि सभ्य और कुलीन शत्रु के साथ उसके विनाश के समय भी और आदर से व्यवहार करना चाहिये। राणा को यह वचन दिया गया कि किसी समय उसे शाही दरबार में हाज़िर होने की आवश्यकता नहीं है। किले के भीतर ही वह सभी आज्ञाओं का पालन किया करे और आवश्यकता के समय एक हजार सवार शाही फौज की सहायता के लिये भेजता रहे। अमरसिंह से केवल इतना ही करने को कहा गया। अमरसिंह ने यह भी कहला भेजा कि वृद्धावस्था के कारण मैं शाही दरबार में नहीं आ सकूँगा। बादशाह ने यह भी स्वीकार कर लिया है परन्तु शाहजादे के साथ मिलने से नहीं बच सकता था। राणा उससे मिला और बहुत राज़ी हुआ। उसका बड़ा और आदर से स्वागत किया गया और विदा होते समय उसे बहुत भेंटें दी गईं। शहजादे में चौथाई राजपूती खून था। उसकी माता राठौर की राजकुमारी थी। अमरसिंह को अनुभव को देख कर विस्मित हो गए। गम्भीर और तेजस्वी पुरुष को भी इस कदर मुसकराता हुआ